श्री राजेन्द्र-धनचन्द्र-भूपेन्द्र-यतीन्द्र-विद्याचन्द्र-जयन्तसेन-शान्ति
गुरुवरों के विचारों/कार्यों को समर्पित

यतीन्द्र वाणी

हिन्दी पाक्षिक

संस्थापक- प. पू. तपस्वी योगिराज, संयमवयः स्थविर श्री शान्तिविजयजी म. सा.
प्रेरक- माण्डवपुर तीर्थप्रेरक, प्रवचनकार प. पू. आचार्यप्रवर श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा.

सम्पादक- पंकज बी. बालड़ स. सम्पादक- कुलदीप डाँगी 'प्रियदर्शी'

* वर्ष : 24 * अंक : 8 * मोटेरा, अहमदाबाद * दिनांक 15 जुलाई 2018 * पृष्ठ : 4 * मूल्य 5/- रुपये

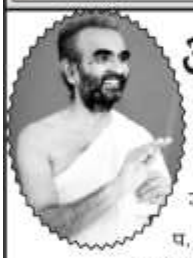

आचार्यदेवेश का सियाणा नगरे भव्यातिभव्य प्रवेश प्रतिष्ठोत्सव हेतु जाजम मुहूर्त्त प्रदान : संघ में हर्ष

उदयपुर, (स. सं),

प. पू. पुण्य-सम्राट श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. के पट्टधर एवं योगीराज, कृपासिन्धु गुरुदेव, संयमवयः स्थविर श्री शान्तिविजयजी म. सा. के सुशिष्यरत्न प्रवचनकार, सूरिमन्त्राराधक, संघशिल्पी, माण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा., मुनिराजश्री अशोकविजयजी म. सा. एवं मुनिराजश्री जिनरत्नविजयजी म. सा. आदि ठाणा का मंगलमय नगर प्रवेश बैण्ड-बाजे एवं ढोल की मधुर स्वरलहरियों के साथ अनेक गुरुभक्तों के संग भव्य शोभायात्रा के साथ हुआ।

आचार्यदेवश्री नगर प्रवेश करते

आचार्यदेवश्री की गहुँली कर सामैया करती महिलाएँ

भव्य नगर प्रवेश मुख्य बस स्टेण्ड से होकर ग्राम पंचायत मार्ग से होते हुए मट्टों का चौक पर पहुँचा जहाँ महिलाओं ने सिर पर कलश धारण कर सामैया किया। शोभायात्रा के दौरान मार्ग में अनेक स्थानों पर आचार्यदेवेशश्री की गहुँली कर बधाते हुए आत्मीय स्वागत-अभिनन्दन किया गया।

शोभायात्रा जिनालय में पहुँचकर दर्शन-वन्दन कर धर्मसभा में परिवर्तित हो गई। धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए आचार्यदेवेशश्री ने कहा कि मनुष्य जन्म हमें दुर्लभ मिला है और हम सभी को धर्म की राह पर चलते हुए इसे सार्थक करना है। शक्ति हो उतनी साधना, आराधना और भक्ति अवश्य करना चाहिये और भक्ति अनेक प्रकार से की जा सकती है, वाणी पर संयम रखना भी भक्ति है और किसी व्यक्ति या जीव को प्रसन्न करने की कोशिश भी साधना है। माता-पिता की सेवा से बढ़कर संसार में ओर कोई भक्ति नहीं हो सकती है। सारे तीर्थों की यात्रा के पुण्य से अधिक माता-पिता की निःस्वार्थ सेवाभाव से की गई भक्ति सर्वोपरि मानी गई है। भाग्यशाली है जिनके माता-पिता हैं और वे निष्काम भाव से उनकी सेवा कर रहे हैं।

आचार्यदेवश्री जयरत्नसूरिजी म. सा. ने सभी को जीवदया और दयाधर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। धर्मसभा के पश्चात् उन्होंने श्री केशरियानाथ-पार्श्वनाथ व श्री राजेन्द्रसूरीश्वर जिनालय प्रतिष्ठा के विषय में 9-10-11 तीन दिन तक श्रीसंघ के लगभग 125 सदस्यों के साथ चर्चा की तथा आगामी 11 फरवरी 2019 को होने वाले अंजनशलाका-प्रतिष्ठोत्सव हेतु प्रमुख निर्णय किए गए, जिसे आचार्यदेवश्री की साक्षी में सर्वानुमति से पारित किए गए। यह प्रतिष्ठोत्सव पुण्य-सम्राट के पट्टधरद्वय गच्छाधिपतिश्री नित्यसेनसूरिजी म. सा. की शुभ निश्रा एवं आचार्यदेवेशश्री जयरत्नसूरिजी म. सा. के मार्गदर्शन में सम्पन्न होगा जिसमें अनेक आचार्यों एवं श्रमण-श्रमणिवृन्द के पधारने की सम्भावना है। सूरिमन्त्राराधक आचार्यदेवश्री इस ऐतिहासिक प्रतिष्ठोत्सव हेतु जाजम का मुहूर्त्त मगसर वदि 6, दिनांक 28 नवम्बर 2018 तय कर जैन श्रीसंघ सियाणा को प्रदान किया। जाजम का मुहूर्त्त पाकर सभी का मनमयूर नाच उठा और नृत्य करते हुए केशरियानाथ-पार्श्वनाथ-दादा गुरुदेव श्री राजेन्द्रसूरि एवं माण्डवपुर तीर्थोद्धारक के जयघोष से सम्पूर्ण वातावरण को गुँजायमान कर दिया।

आचार्यदेवश्री जाजम मुहूर्त्त प्रदान करते हुए

प्रसन्न मुद्रा में आशीर्वाद देते हुए

इस प्रसंग पर निकटवर्ती ग्राम-नगरों के अतिरिक्त अनेक स्थानों से गुरुभक्त पधारे। यहाँ से विहार कर आचार्यदेवेशश्री बागरा पधारे। जहाँ धूमधाम से गुरुभगवन्तों का भव्य प्रवेश कराया गया। आचार्यदेवेशश्री का विहार श्री माण्डवपुर तीर्थ की ओर गतिमान है।

गच्छाधिपतिश्री का किया विहारानुक्रम में स्वागत

उदयपुर, (स. सं),

प. पू. पुण्य-सम्राट श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. के पट्टधर गच्छाधिपति श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म. सा. आदि श्रमण-श्रमणिवृन्द का विहारानुक्रम में मार्ग में आये ग्राम-नगरों में भव्य स्वागत किया गया।

गच्छाधिपतिश्री का 2018 का वर्षावास उज्जैन नगरी में है जहाँ 21 जुलाई 2018 को भव्य वर्षावास का मंगल प्रवेश होगा। आज गच्छाधिपति का छोटी सरवा पदार्पण पर नगरजनों ने स्वागत करते हुए भव्य मंगल प्रवेश करवाया।

नगर प्रवेश की शोभायात्रा नगर के प्रमुख मार्गों से होती हुई उपाश्रय पहुँची जहाँ पर महिलाओं ने सिर पर कलश धारण कर सामैया किया। गच्छाधिपति के प्रवेश पर मार्ग में गुरुभक्तों ने गहुँली कर स्वागत किया।

गच्छाधिपतिश्री के दर्शनार्थ श्रीसंघों एवं गुरुभक्तों का आगमन विहार में भी निरन्तर जारी है।

गहुँली कर बधाते हुए

शोभायात्रा का परिदृश्य

जावरा में एक दिवसीय शिविर

उदयपुर (स. सं.)

दादा गुरुदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. की क्रियोद्धार की पुण्य-भूमि जावरा में श्री राज राजेन्द्र वाटिका में एक दिवसीय बच्चों का शिविर आयोजित किया गया, जिसमें बच्चों को धार्मिक शिक्षा प्रदान करते हुए नित्य के धार्मिक संस्कारों से परिचय कराते हुए करने की प्रेरणा प्रदान की गई।

शिविर में बालक-बालिकाओं ने उत्साह के साथ भाग लेकर सभी गतिविधियों में भाग लिया। महिलाओं ने दादा गुरुदेव की अष्टप्रकारी पूजा पढ़ाई।

नित्य भक्तामर पाठ का एक वर्ष पूर्ण

उदयपुर (स. सं.)

साध्वीश्री प्रीतिदर्शनाश्रीजी म. सा. की प्रेरणा से निम्बाहेड़ा में गत चातुर्मास से नित्य सामूहिक भक्तामर-पाठ एवं गुरु-गुण-इक्कीसा पाठ का शुभारम्भ किया गया था। जो अखण्डित रूप से नित्य चल रहा है एवं आगे भी गतिमान रहेगा।

प्रतिदिन सामूहिक भक्तामर-पाठ के एक वर्ष पूर्ण करने की यात्रा में संघ की तरुणाई जिसमें राजेश बोडाणा, भरत पालेचा, राकेश बोडाणा, नितीन सेठिया एवं महिलाओं में सुशीला लोढ़ा, जस्सुबाई जैतावत, सुशीला बोडाणा, मन्जू चपलोत, अंगूरबाला सिरोहिया, संगीता बेलावत, लता डॉगी, स्नेहलता पालेचा आदि का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ।

भक्तामर के साथ नित्य परमात्मा की पूजन, चैत्यवन्दन, गुरु वन्दन एवं आरती में सभी भाग ले रहे है। यतीन्द्र वाणी परिवार अनुमोदना करते हुए बधाई प्रेषित करता है।

साध्वीश्री विद्वद्गुणाश्रीजी नागदा में

उदयपुर (स. सं.)

साध्वीश्री विद्वद्गुणाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा विहारानुक्रम में नागदा जं. पधारे।

श्री ब्रजेश बोहरा ने बताया कि साध्वीजी का विहार यहाँ से महिदपुर की ओर होगा, जहाँ साध्वीश्री का इस वर्ष का चातुर्मासिक प्रवेश दिनांक 18 जुलाई 2018 को होगा।

यतीन्द्र वाणी में प्रकाशनार्थ सामग्री निम्न नम्बर व ई-मेल पर भिजावें।
कुलदीप 'प्रियदर्शी' 09413763991
e-mail : priyadarshikuldeep@gmail.com

यतीन्द्र वाणी पढ़िये, पढ़ाइये। घर-घर तक इसे पहुँचाइये।

राजगढ़ में क्रियोद्धार दिवस मनाया

उदयपुर (स. सं.)

प. पू. दादा गुरुदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. ने समाज के साधु-साध्वियों में शिथिलाचार व क्रियाओं को विशुद्ध रूप से किया जा रहा था। इसलिए 150 वर्ष पूर्व इन क्रियाओं का शुद्धिकरण किया गया था। वे हमेशा ही ध्यान और तप को महत्त्व देते थे। उनके जीवन का अधिकतम समय ज्ञान साधना और ध्यान में व्यतीत हुआ। उक्त विचार राजेन्द्र भवन, राजगढ में आयोजित 150 वें क्रियोद्धार दिवस पर आयोजित धर्मसभा में साध्वीश्री अविचलदृष्टाश्रीजी म. सा. ने प्रकट किए।

उन्होंने कहा कि मानव जन्म हमें पूर्वभव के पुण्यार्जन से प्राप्त हुआ है। इसमें भी उत्तम कुल व जैन धर्म मिलना तथा दादा गुरुदेव की पुण्य भूमि पर जन्म लेना हमारा परम सौभाग्य है।

150 वें क्रियोद्धार दिवस पर प्रातः अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् द्वारा आयम्बिल, सामायिक का सामूहिक आयोजन किया गया। दोपहर में श्री राजेन्द्रसूरि अष्टप्रकारी पूजा पढ़ाई गई। रात्रि में गुरुदेव की स्वर्गारोहण भूमि पर दादा गुरुदेव की मनमोहक, चित्ताकर्षक भव्य अंगरचना कर 108 दीपक से महाआरती की गई। इस प्रसंग पर परिषद् के राष्ट्रीय महामन्त्री श्री अशोक श्रीश्रीमाल, ओसवाल पंच अध्यक्ष श्री बसन्तीलाल मेहता, श्री दिनेश मामा, श्री माँगीलाल मामा आदि अनेक गणमान्य एवं गुरुभक्त उपस्थित थे।

मुनिराजश्री का चातुर्मास सियाणा

उदयपुर (स. सं.)

प. पू. पुण्य-सम्राट श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. के पट्टधर एवं सूरिमन्त्राराधक, भाण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय जयरत्न-सूरीश्वरजी म. सा. के सुशिष्यरत्न मुनिराजश्री जिनरत्नविजयजी म. सा. एवं मुनिराजश्री अमृतरत्नविजयजी म. सा. का सन् 2018 का वर्षावास धर्मनगरी सियाणा में होगा।

आचार्यदेवेशश्री जयरत्नसूरिजी म. सा. ने श्री सुविधिनाथ जैन पेढ़ी (संघ) सियाणा की भावपूर्वक विनन्ती को स्वीकार करते हुए अपने तीन दिवसीय प्रतिष्ठोत्सव के कार्यक्रमों हेतु आयोजित बैठक में घोषणा की। आचार्यश्री के मुख से चातुर्मास की घोषणा सुनकर उपस्थित श्रीसंघ के पदाधिकारियों एवं गुरुभक्तों ने हर्षध्वनि के साथ अपनी प्रसन्नता व्यक्त की।

अनुकरणीय जीवित महोत्सव

उदयपुर (स. सं.)

धर्मनिष्ठ समाजसेवी एवं चिन्तक श्री जे. के संघवीजी (आहोर' ठाणे) अपना जीवित महोत्सव आयोजित करने के लिए पुण्य-सम्राट गुरुदेवश्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. से चर्चा करने पहुँचे, तब गुरुदेव ने कहा कि जब तय करोगे तब हम आ जायेंगे। बाद में उन्हें यह प्रश्न आया कि जीवित महोत्सव का वास्तविक मकसद क्या है ? स्पष्ट अर्थ तो यह है कि इस भव का वैर, द्वेष अगले भव में नहीं ले जाना चाहिये। इसे मृत्यु महोत्सव भी कहते है। प्रत्येक प्राणी मात्र से क्षमा माँगना और वो हमें प्रसन्नता के साथ क्षमा करे, इसके लिए हम स्वामीवात्सल्य, पूजा-भक्ति आदि का आयोजन करके सभी परिजनों को बुलाते है, मगर आज के व्यस्ततम समय में कई लोग आते ही नहीं है, तो हमारा ध्येय पूरा नहीं हो पाता है। इस प्रकार अपने मन की यह सब बात बताई। तब गुरुदेव ने कहा- बात तो सत्य है, मगर आपने क्या सोचा है, वह बताओ।

तब उन्होंने कहा- मैं चिन्तन करके आपको बताता हूँ। घर पर भी नित्य यही चर्चा होती कि सबको मिले बिना कार्य पूरा नहीं होगा। तत्पश्चात् घर पर सबकी सहमति से यह निर्णय हुआ कि प्रत्येक गाँव में जाकर अपने परिचित एवं जिनके साथ हमारी कभी बोलचाल हुई हो या जिनके साथ हमने कषाय किया हो और जिनका हमने जाने-अनजाने कभी दिल दुःखाया हो, उनको मिच्छामि दुक्कडं करना। तो इसी विचार को मूर्त्तरूप देने हेतु श्री संघवी ने उत्कृष्ट पूजन, सामायिक के उपकरण व साहित्य आदि सामग्री सभी के यहाँ व्यक्तिगत रूप से जाकर क्षमा माँगते हुए अर्पण करने की योजना बनाई। समस्त भारत में 1500 परिवारों से व्यक्तिशः मिलने का उनका लक्ष्य है और उसी सन्दर्भ में वे अलग-अलग शहरों नगरों में जा रहे है। इनके इस महान कार्य से एक ओर पैसे का सदुपयोग हो रहा है और मिच्छामि दुक्कडं का इनका ध्येय भी पूर्ण हो रहा है तथा समाज में भी इस अनूठे कार्य की शुभ शुरूआत हो रही है। यतीन्द्र वाणी परिवार श्री संघवीजी के इस कार्य की अनुमोदना करते हुए भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए भाव से अभिनन्दन करता है।

साधु-साध्वी भगवन्तों के ग्राम-नगरों में चातुर्मासिक प्रवेश सम्पन्न

उदयपुर (ज. सं.)

सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक संघ के पुण्य-सम्राट गुरुदेव श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. के पट्टधरद्वय गच्छाधिपतिश्री नित्यसेनसूरीश्वरजी म. सा. एवं माण्डवपुर तीर्थोद्धारक, आचार्यदेवेशश्री जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. के आज्ञानुवर्ती श्रमण-श्रमणिवृन्द विहानुक्रम में अनेक नगरों, ग्रामों में विचरण कर धर्म प्रभावना करते हुए 2018 के वर्षावास हेतु निश्चित स्थान पधारने पर उनके भव्य मंगल प्रवेश पर अनेक कार्यक्रम श्रीसंघों द्वारा आयोजित किए गये।

प्राप्त जानकारी के अनुसार निम्न स्थानों पर चातुर्मासिक मंगल प्रवेश सानन्द सम्पन्न हुए।

भीनमाल (राज.)-

समत्व-साधिका साध्वीश्री महाप्रज्ञाश्रीजी म. सा. की सुशिष्या साध्वीश्री प्रीतिदर्शनाश्रीजी म. सा., साध्वीश्री रुचिदर्शनाश्रीजी म. सा., साध्वीश्री श्रुति-दर्शनाश्रीजी म. सा., साध्वीश्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म. सा., साध्वीश्री प्रीतदर्शनाश्रीजी म. सा., साध्वीश्री रीतदर्शनाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा-6 का भव्य चातुर्मास प्रवेश दिनांक 11-7-2018 को भीनमाल के श्री महावीरजी मन्दिर में हुआ।

प्रवेश शोभायात्रा में सबसे आगे महिलाएँ एक सरीखी पारम्परिक वेशभूषा में सिर पर कलश लेकर चलती हुई शोभायात्रा की गरिमा बढ़ा रही थी। बाजे-गाजे के साथ शोभायात्रा नगर के प्रमुख मार्गों से गुजरती हुई श्री महावीरजी मन्दिर पहुँच कर धर्मसभा में परिवर्तित हो गई।

इस अवसर पर अनेक श्रीसंघों ने भीनमाल पधार कर साध्वी भगवन्तों की अगवानी करते हुए आशीर्वाद प्राप्त किया।

खेतवाड़ी (मुम्बई)-

साध्वीश्री ऋद्धिश्रीजी म. सा. आदि ठाणा-5 का चातुर्मासिक मंगल-प्रवेश दिनांक 14 जुलाई 2018 को भव्य शोभायात्रा के साथ खेतवाड़ी, मुम्बई महानगरी में हुआ।

इस अवसर पर मुम्बई के उपनगरों से एवं अनेक नगरों से गुरुभक्तों का आगमन पूज्या साध्वीश्री की अगवानी करने हुआ।

भायन्दर (मुम्बई)-

साध्वीश्री योगनिधिश्रीजी म. सा. आदि ठाणा-5 का भव्य चातुर्मासिक मंगल-प्रवेश दिनांक 15 जुलाई 2018 को शोभायात्रा के साथ भायन्दर, मुम्बई महानगरी में हर्षोल्लास के साथ हुआ।

इस अवसर पर मुम्बई के उपनगरों से एवं अनेक नगरों से गुरुभक्तों का आगमन हुआ।

थराद-

साध्वीश्री काव्यरत्नाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा-4 का 2018 का चातुर्मासिक मंगल-प्रवेश दिनांक 15 जुलाई 2018 को हर्षोल्लास के साथ धर्मनगरी थराद (गुजरात) में हुआ।

पूज्या साध्वीश्री का नगर प्रवेश भव्य शोभायात्रा के साथ हुआ। महिलाएँ मंगल गीतों से वातावरण को मधुर बना रही थी तो बैण्ड की स्वरलहरियों पर गुरुभक्त नृत्य कर रहे थे। थराद नगरी के प्रमुख मार्गों पर स्थान-स्थान पर गुरुभक्तों ने गहुँली करके श्रमणिवृन्द का स्वागत-अभिनन्दन करते हुए बधाया। शोभायात्रा श्री राजेन्द्रसूरि ज्ञान मन्दिर पहुँचकर धर्मसभा में परिवर्तित हो गई।

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए साध्वीश्री ने कहा कि पुण्य=सम्राट का इस नगरी से अटूट सम्बन्ध रहा है। आप सबको धर्म-ध्यान, तप-त्याग एवं साधना-आराधना कर इस वर्षावास को सफल बनाते हुए गुरुदेवश्री को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करना है।

इस अवसर पर अनेक श्रीसंघ एवं गुरुभक्तों सहित गणमान्य उपस्थित थे।

जोधपुर-

साध्वीश्री दर्शनकलाश्रीजी म. सा. व साध्वीश्री जीवनकलाश्रीजी म. सा. का मंगल-प्रवेश जोधपुर (राज.) में दिनांक 15 जुलाई 2018 को बाजे-गाजे के साथ भव्य शोभायात्रा के साथ सम्पन्न हुआ।

नीमच-

साध्वीश्री पुण्यदर्शनाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा-3 का मंगल-प्रवेश नीमच नगर (म. प्र.) में दिनांक 15 जुलाई 2018 को बैण्ड-बाजों एवं ढोल की मधुर स्वरलहरियों के साथ हुआ। इस अवसर पर अनेक श्रीसंघों से गुरुभक्त साध्वीश्री की अगवानी एवं आशीर्वाद प्राप्त करने पधारे।

वर्षावास

धर्म-प्रचार की दृष्टि से भारत में चातुर्मास का अवसर एक स्थायी महत्त्व रखता है। इन चार महिनों में प्रायः सभी धर्मों के साधु-मुनिराज-सन्त स्थिरवास करते हैं एवं अपने-अपने सिद्धान्त-शास्त्रों का वांचन-पाठन-व्याख्यान करते हैं और अपने अनुयायियों को धर्ममयी जीवन यापन करने की ओर प्रेरित करते हैं। इसके साथ-साथ उनमें भ्रातृत्व, संगठन, दया, दान, विद्या-प्रेम आदि सद्भावों का संचार करने के साथ इनकी क्रियान्विति भी करने का पूरा-पूरा प्रयत्न करते हैं।

भारत इन वर्षों में अपनी आर्थिक-शक्ति के विकास की ओर अग्रसर हो रहा है। इस विकास में गतिशील रहने के लिए मानव की संयुक्त-शक्ति अधिक उपादेय मानी गयी है। राष्ट्र इस शक्ति की वृद्धि करने के लिए बहुत कुछ प्रयत्न भी कर रहा है, परन्तु वह वैसी नहीं बढ़ पाई है, जैसी बढ़नी चाहिए थी। इस त्रुटि के मूल में पारस्परिक प्रेम, सौहार्द, संगठन, विश्वास, साहचर्यता आदि भावों का नितान्त अभाव ही है। राष्ट्र की इकाई से जैन समाज कोई अलग इकाई नहीं है। यह कार्य जैनाचार्य, मुनि, साधु सहज और भली-विध कर सकते हैं, कारण कि इन भावों अथवा गुणों की प्राप्ति में वे सहज ही योग दे सकते हैं। बड़ा और कठिन तप करने के तो वे अभ्यासी हैं। यह तप-कर्म वे चाहें तो कर सकते हैं। इसमें उनको राष्ट्र-मोह-कर्म अथवा देश-मोह-कर्म का बन्धन भी नहीं लग सकता, क्योंकि उनकी भावना यह तो नहीं होगी कि भारत के जैन ही संगठित हों, शक्ति सम्पन्न हों या वे जो जैन हैं उन्हीं को उद्बोधन देते हैं। जैनाचार्य एवं साधु-मुनियों को विश्व-बन्धुत्व की भावना के साथ भारत की सेवा के क्षेत्र में भी योगदान देना चाहिए - ऐसी प्रार्थना है।

समूचे भारत को लक्ष्य में रखकर, राष्ट्र के कर्णधारों के कार्य को सुगम बनाने का ध्यान रखकर इतना अवश्य करें कि जहाँ वे चातुर्मास विराजित हों वहाँ-

1. समाज में विद्यमान कुसंगठन को समाप्त कर संगठन उत्पन्न करें।
2. हानिकर सामाजिक कुरीतियों को बन्द करें।
3. अनावश्यक व्यय एवं अपव्यय को रोकें।
4. होनहार एवं निर्धन युवकों को सप्रेम सहयोग कराने का हित कार्य करें।
5. विद्या-प्रेम जागृत करें।
6. स्व-मण्डन एवं पर-खण्डन की आदत का सर्वथा त्याग करें।
7. 'जीओ और जीने दो' के महामन्त्र का प्रचार-प्रसार करें।
8. अहिंसा एवं शाकाहार के महत्व को समझाते हुए हिंसा को रोकें।
9. विश्व-बन्धुत्व तथा विश्व-शान्ति के प्रयासों में सक्रिय हों।

आया शुभ चातुर्मास, धर्म-ध्यान करें खास,
सन्त-सतियों के पास, सुनें धर्म-सार है।
बेला-तेला-उपवास, अट्ठाई या पूरा मास,
तपस्या से तन-मन, बने निर्विकार है।
मिटा दें सभी विवाद, प्रेम का गूँजे निनाद,
प्रभु के गुणानुवाद, जपें नवकार हैं।
लक्ष चौरासी जीवों से, क्षमायाचना करके,
'पारदर्शी' कर्म काट, पाएँ मोक्ष-द्वार हैं।

-देहदानी ॐ 'पारदर्शी',
उदयपुर (राज.

सन् 2018 के चातुर्मासार्थ
देश के विभिन्न ग्राम-नगरों में
आचार्यभगवन्तों, श्रमण-श्रमणिवृन्दों के
भव्य वर्षावास मंगल प्रवेश
के पावन अवसर पर
यतीन्द्र वाणी परिवार
की ओर से
श्रीचरणों में वन्दना सह हार्दिक शुभकामना

डोरडा में यात्री धर्मशाला एवं भोजनशाला का शुभारम्भ

उदयपुर (स. सं.)

प. पू. गुरुदेव पुण्य-सम्राट श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. के पट्टधर माण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. आदि ठाणा की पावन शुभनिश्रा में श्री राजेन्द्र-शान्ति विहार, डोरडा (राज.) में आचार्यदेवेशश्री की सद्प्रेरणा से नूतन निर्मित यात्री धर्मशाला एवं भोजनशाला का शुभारम्भ दिनांक 6-7-2018 को प्रातः शुभ मुहूर्त में किया गया।

इस अवसर पर अल्पाहार का लाभ शा. मिलापचन्दजी जेठमलजी चौधरी निवासी गढ़सिवाणा वालों ने लिया।

आचार्यदेवेशश्री की शुभनिश्रा में आयोजित इस भव्य शुभारम्भ में दोनों नवनिर्मित भवनों में घट स्थापना का लाभ श्रीमती विमलादेवी मदनराजजी शाहजी पाँथेड़ी परिवार ने लिया। दो वर्ष तक वैयावच्च का लाभ शा. धम्पालालजी पुखराजजी पालगोता चौहान परिवार निवासी सुराणा (राज.) ने लिया।

नवनिर्मित भोजनशाला भवन का लाभ श्रीमती सुआदेवी लालचन्दजी भण्डारी निवासी सायला (राज.) हस्ते- श्री धीरजजी भण्डारी ने लिया।

प. पू. आचार्यदेवेशश्री की प्रेरणा से निर्मित यह विहार धाम मीनमाल से 16 कि.मी. दूर जसवन्तपुरा रोड़ पर साधु-साध्वी के विचरण के समय विश्राम की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए बनाया गया है।

इस अवसर पर विहार धाम के ट्रस्टी एवं निकटवर्ती क्षेत्रों के गणमान्य तथा गुरुभक्त उपस्थित थे। आचार्यदेवेशश्री के दर्शनार्थ विहार में भी सम्पूर्ण देश के नगरों से नित्य श्रद्धालु गुरुभक्तों का आगमन निरन्तर जारी है।

अतिप्राचीन श्री माण्डवपुर महातीर्थ

पुण्य-सम्राट श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. के पट्टधर एवं योगिराज संयमवयः स्थविर श्री शान्तिविजयजी म. सा. के विनीत सुशिष्य माण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्यदेवेश

श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा.

आदि श्रमण-श्रमणिवृन्द

भव्य वर्षावास मंगल प्रवेश

दिनांक 18-7-2018 को प्रातः 8 बजे

आप सभी सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

आमन्त्रक :

श्री महावीर जैन श्वेताम्बर पेढ़ी (ट्रस्ट)

श्री वर्धमान-राजेन्द्र जैन भाग्योदय ट्रस्ट (संघ)

मु. पो.- माण्डवपुर तीर्थ, वाया- सायला, जिला- जालोर (राज.)

चलभाष : 7340019703-4-5

योगी-वाणी

धैर्य और तपस्या जिसमें है, वही संसार को प्रकाशित कर सकता है।

जीवन में प्रसन्न व्यक्ति वह है जो स्वयं का मूल्यांकन करता है और दुःखी व्यक्ति वह है जो सिर्फ दूसरों का मूल्यांकन करता है।

-योगिराज गुरु श्री शान्तिविजयजी

आत्मीय निवेदन

समस्त श्रीसंघों के अध्यक्षों, साधु-साध्वी भगवन्तों से निवेदन है कि आप अपने यहाँ होने वाले कार्यक्रमों के समाचार आदि प्रकाशित सामग्री प्रत्येक मास की 10 व 20 तारीख तक 'यतीन्द्र वाणी' में प्रकाशनार्थ भिजावें।

-सम्पादक, यतीन्द्र वाणी,
श्री राजेन्द्र-शान्ति विहार,
साबरमती-गाँधीनगर हाइवे, पो.- मोटेरा-382 424

श्री राजेन्द्र-धनचन्द्र-भूपेन्द्र-यतीन्द्र-विद्याचन्द्र-जयन्तसेन-शान्ति गुरुवरों के विचारों एवं कार्यों को समर्पित
सम्पूर्ण जैन समाज का ज्ञानवार्धक लोकप्रिय हिन्दी पाक्षिक पत्र

यतीन्द्र वाणी

हिन्दी पाक्षिक

सम्पादक
पंकज बी. बालड़

स. सम्पादक
कुलदीप डोंगी 'प्रियदर्शी'

प्रधान कार्यालय
श्री राजेन्द्र-शान्ति विहार
विसामो बंग्लोज के पास,
विसत-गाँधीनगर हाइवे,
मोटेरा, चान्दखेड़ा, साबरमती,
अहमदाबाद-382 424 (गुजरात)

सदस्य शुल्क

संरक्षक सं.	11000/- रुपये
सदस्य सं.	7100/- रुपये
आजीवन ग्राहक	1000/- रुपये
एक प्रति	5/- रुपये

विज्ञापन दर

प्रथम पूरे पृष्ठ के -	5100/- रुपये
अन्य पूरे पृष्ठ के -	2100/- रुपये
अन्तिम पूरे पृष्ठ के -	3100/- रुपये
अन्दर के एक चौथाई के -	801/- रुपये

विशेष सूचना- प्रत्येक मास की 10 एवं 20 तारीख तक विज्ञापन एवं समाचार कार्यालय पर भेजना अनिवार्य है। चैक या ड्राफ्ट 'यतीन्द्र वाणी' के नाम से भेजें।

* लेखक के विचारों से संस्था और सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं। * सम्पादक, यतीन्द्र वाणी

प्रेषक :
यतीन्द्र वाणी (हिन्दी पाक्षिक)
C/o. श्री राजेन्द्र-शान्ति विहार
विसामो बंग्लोज के पास,
विसत-गाँधीनगर हाइवे,
मोटेरा, चान्दखेड़ा, साबरमती,
अहमदाबाद-382 424 (गुजरात)
दूरध्वनि : 079-23296124,
मो. 09426285604
e-mail : yatindravani222@gmail.com
www.shrirajendrashantivihar.com

'Reg. Under Postal Registration No. AHD-C/22/2018-2020 VALID UPTO 31st December-2020 issued by the SSPO's Ahmedabad City Division, permitted to post at Ahmedabad PSO on 1st & 15th every month'
RNI No. GUJ/HIN/1999/321
Licensed to Post Without Prepayment No. PMG/HQ/070/2018-20 valid up to 31/12/2020

श्री.....
.....
.....

स्वत्वाधिकार प्रकाशक, मुद्रक- शान्तिदूत जैनोदय ट्रस्ट, सम्पादक- पंकज बी. बालड़, यतीन्द्र वाणी हिन्दी पाक्षिक, श्री राजेन्द्र शान्ति विहार, पो.- मोटेरा-382 424 से प्रकाशित एवं सनसाईन फोटो प्रिन्ट, एफ-4, तुषार सेन्टर, नवरंगपुरा, अहमदाबाद में मुद्रित